JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अहल्या शापित आ उद्धार के सम्पूर्ण वृत्तान्त् ।

– रोहित कुमार चौधरी,

ग्राम–चहुँटा, पो०–कमतौल, जिला–मधुबनी

मो०–9471064339

अहल्या शापित आ उद्धार के सम्पूर्ण वृत्तान्त् ।

अहल्या के छलथि आ कोना सिला भेलथि, आ ओ स्थान अखन कत्त अछि। ई त्रेता युग में दसरथ जी के पुत्र प्रभु श्री राम काल के कथा अछि,जखन प्रभु श्री रामचन्द्रजी मिथिला के महाराज जनक के सुन्दरपुरी के ओर जेबाक कर्म में छलथि। तखन,

साधु साध्विनि शंसन्तो मिथिलां समपूजयन।

मिथिलोपवने तत्र आश्रमं द्यस्य राघवः।।

श्री रामचन्द्र जी मिथिलापुरी के एगो उपवन में पुराना, निर्जन मुदा रमनीक आश्रम देख कऽ विस्वामित्रजी सऽ पुछई छथिन की हे मुनि ई आश्रम त परम् शोभायमान अछि मुदा अय आश्रम में कोनो ऋषि रहईत् नै देखवा में आयब रहल अछि से ऐना किया हम सुनँ चाही रहल छी की इ पहिले किनकर आश्रम छलैन। श्री रामचन्द्रजी के बात सुनी क महर्षि विश्वामित्रजी कहलैथ हे राघव,हम अहाँ के पूरा वृत्तान्त सुना रहल छि । अहाँ ध्यानपूर्वक सुनु, हे राम,पूर्वकाल में इ आश्रम महर्षि गौतम के छलैन। आ इ देवलोक जेना आश्रम छल आ देवता हिन्कर वन्दना करैत छलैथ । अय आश्रम में अहल्या के साथ गौतम ऋषि कतेको बरखक तक तप केलैथ आ एकदिन गौतम ऋषि आश्रम स कतो दूर चौल गेलैथि। आश्रम में मुनि के नै देख कऽ सहस्त्राज्ञ शचीपति इन्द्र गौतम के रूपधारण कऽ अहिल्या के सङ्ग भोग केलैथ, आ आहल्या के कुटी स बाहर निकलैथ आ गौतमके भय सऽ इन्द्र वेकल आ सशंकित छलथि की ओ–कुटी में गौतमके प्रवेश करैत देख लैथ आ ऋषि तपोवल स युक्त, तीर्थ के जल स भीजल, अग्नि तुल्य प्रकाशमान तथा हवन के लेल लकड़ी कुश इत्त्यादि हाथमें लेने छलेथि,हुनका देखिते इन्द्र वहुत डइर गेलैथ आ हुनकर चेहरा

फिका पैर गेलैन। गौतमजी,अपन रूप इन्द्रके धारण केने देखलथ आ हुन्कर छवि स बुइझ गेलखीन,की इ असत्यकर्म क,क जा रहल छैथ,आ क्रोध में आबिक श्राप द देलखिन्न।

मम रूपं जमास्थाय कृत्वानसि दुर्मते।

अकर्तव्यमिदं तस्माद्विफलस्त्वं भविष्यसि।।

आ गौतमजी श्राप द देलखिन्न की अहाँ अराडकोश रहित (नपुंसक) भ जेब । हात्मा गौतम के कुपित भ क,शाप दइते ओहिक्षण इन्द्रके दुनु वृषशा (अराडकोश) जमीन पर गिर गेल। अय प्रकार सऽ इन्द्रके शाप दऽ देलखिन्न। गौतमजी अहिल्या के सेहो शाप दऽ देलखिन्न की अहाँ अहि स्थान पर सिला रूप में हजारो बरखक तक वास करब आ अहाँक भोजन खाली पवन हेत आ किछु नै खा सकब (हमर शाप सऽ) इ अहाँक करनी के फल अछि जे भोगु आ अदृश्य भऽ कऽ रहब अर्थात् अहाँक कोनो लोक नै देख सकत।

जखन इ घोर वन में महाराज दशरथजी के पुत्र अजय श्री रामचन्द्रजी पधारता, तखन अहाँ पवित्र हेब, अर्थात हमर इ शाप सऽ मुक्त भऽ जाएब आ अहाँ अपन वैह छवि में आएब जाएब जेना श्राप स पहिने छलौ। अय प्रकार सऽ महातेजस्वी गौतमऋषि अहिल्या के शाप दऽ आश्रम के त्याग कऽ हिमालय के शिखरपर जा कऽ तप करऽ लगलैथि।

उत्पाटय मेषवृषणौ सहस्त्राक्षे न्यवेशयन।

तदाप्रभृति काकुत्स्थ पितृदेवाः समागताः।।

तथने सब देवतागण मिल क मेष (भेड़) के वृषशा (अराडकोश) इन्द्र के प्रदान केलैथि, तखने सऽ इन्द्र मेषवृण सेहो कहेलैथि।

शापदग्धा पुराभर्त्रा राम शक्रापराधतः।

अहल्याख्या शिलाजज्ञे शतलिङ्गःकृतस्स्वराट् ।।

(लिङ्गशब्देन भागाकारं चिन्हं स्वराडिन्द्रः)

कुर्वता तपसो विध्नं गौतमस्य महात्मनः।

क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्यमिदं कृतम् ।।

सच तऽ, इ छल की गौतमऋषि सब देवतागण के स्थान प्राप्त करवाक हेतु तपस्या करैत छलैथि। आ इन्द्र के भय भेलैन की सब देवता के स्थान गौतम लऽ लेता ओहि वजह सऽ गौतम के तपस्या नस्टभ्रष्ट, भङ्ग, करवाक हेतु हुन्कर क्रोध जागरित करवाक अभिप्राय स अहिल्या के संग छल कऽ कऽ भोग केलैथि। आ

अई प्रकार स गौतम के क्रोधित कऽ कऽ हुन्का द्वारा श्राप दिया कऽ हुन्कर बड़ पएग तपस्या के फल हरि लेलैन। तखन विश्वामित्र प्रभु श्री राम के कहलैथि, आव अहाँ पुण्यात्मा गौतम के आश्रम चलु आ महाभागि अहिल्या के तारियौन जाय सऽ ओ देवरूपी भऽ जाएथ, आ प्रभु श्री रामचन्द्रजी गौतम ऋषि के आश्रम में प्रवेश केलैथि, आ ओय ठाम जा कऽ देखलेथि की आहल्या तपके तेज सऽ प्रकाशित भऽ रहल छथि।

राधवौ तु ततस्तस्याः पादौ जग्रहतुस्तदा।

स्मरन्ती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा च तौ।।

गौतम नारी श्राप बस देह धरि धीर।

चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर।।

आ श्री रामचन्द्र जी के पवित्र आ शोक के नाश करैं वाला चरण के स्पर्श होएते ओ तपोमूर्ति अहिल्या प्रकट भऽ गेलैथि, आ श्रीरामचन्द्रजी के चरण पकैरि क, गोर लगलैनि । आ प्रभु श्री रामचन्द्रजी आ लक्ष्मणजी अहिल्या के पैर छुलैथि, आ अहिल्या गौतमऋषि के कहल बात के याद करैत, प्रभु श्रीरामचन्द्रजी आ लक्ष्मणजी के चरण पकैड़ लेलैथि आ अहिल्या पाद्यादि, अर्घ्य सऽ भली–भाँती हुन्कर आतिथ्य केलैन, आ राम–लक्ष्मण सेहो हुन्कर विधि विधान के संग केल गेल अतिथ्य के ग्रहण केलैथि। आ ओइ समय आकाश सऽ पुष्प के वर्षा होआ लागल, देवतागण नगाड़ा बजावऽ लगलैथि, गन्धर्व आ अप्सरा सब गावऽ आ नाचऽ लगलैथि, देवतागण अहिल्या के प्रशंसा करऽ लगलैथि। गौतम ऋषि के अपन तप के प्रभाव सऽ श्रीरामचन्द्रजी के आगमन के जानकारी भऽ गेलैन् आ अपन आश्रम पहुँच गेलैथ। औत्त पूर्व समान शरीर धारण केनै अहिल्या के पाबि कऽ खुश भेलैथि आ अहिल्या सहित महातेजस्वी गौतमऋषि खुश होएत श्रीरामचन्द्रजी के विधि पूर्वक पूजन केलैथि। फेर स आश्रम में तप कर लगलैथि।

रामोपि परमां पूजां गौतमस्य महामुनेः।

सकाशाद्विधिवत्प्राप्य जगाम मिथिलां ततः।।

तदनन्तर श्रीरामचन्द्रजी सेहो महर्षि गौतम सऽ विधिवत् पूजा ग्रहण केलैथि। आ महाराज जनक के सुन्दरपुरी के ओर प्रस्थान केलैथि।।

कत्त अइछ गौतम आश्रम– ओ आश्रम अखन अहियारी ग्राम में अइछ (जे अहल्यास्थान नाम सऽ जनल जाइत अछि) ओत्त अखन अहल्या जी के भव्य मन्दिर अइछ। आ अहल्या मन्दिर के बगल में प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण आ सीताजी के बहुत भव्य मन्दिर अइछ। इ मन्दिर बिहार राज्य के दरभंगा जिला के जाले प्रखण्ड के कमतौल रेलवे स्टेशन स लगभग 3 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम के कोन (नेरेत्य) में अहियारी ग्राम में अवस्थित अइछ।